!! प्रथम अध्याय !!

प्राचीन संस्कृत अभिलेखों का सामान्य परिचय

- अभिलेख का अर्थ
- अभिलेखों का प्रस्तुत समय निरूपण
- ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यः प्रमुख राजवंश तथा तत्सम्बन्धी अभिलेखों का विवरण
- प्रमुख अभिलेखों का परिचयात्मक विवरण

प्राचीन संस्कृत अभिलेखों का सामान्य परिचय

अभिलेख का अर्थ :-

'अभिलेख' शब्द 'अभि' उपसर्ग पूर्वक 'लिख' धातु से निष्पन्न हुआ है जिसका तात्पर्य होता है - अभिलक्ष्यः लेखः अभिलेखः अर्थात् उद्देश्य को लेकर लिखा गया लेख 'अभिलेख' है। 'अभिलेख' को अंग्रेजी भाषा में 'इन्सक्रिप्शन्स''Inscription' कहा जाता है। इन्सक्रिप्शन शब्द इन्सक्राइब 'Inscribe' धातु से बना है जिसका अर्थ है उत्कीर्ण करना।[1] अतः अंग्रेजी भाषा में उत्कीर्ण लेख को ही अभिलेख की श्रेणी में रखा गया हैं परन्तु यह अभिलेख शब्द का संकुचित अर्थ हैं - अभिलेख का सदैव उत्कीर्ण होना आवश्यक नहीं क्योंकि सिक्कों आदि पर सांचे से तैयार किए गए लेखों के लिए भी अभिलेख शब्द का प्रयोग होता है। पकाई जाने से पहले ईट की गीली मिट्टी पर बनाए गए लेख[2] अथवा नरेगल[3] तथा लक्ष्मणेश्वर[4] प्रस्तर लेख

जो उत्कीर्ण न होकर आस-पास के धरातल को हटाकर उभारे गये है। वह अभिलेख के अन्तर्गत रखे जाते हैं इसी प्रकार कसिया ताम्रलेख के प्रथम पंक्ति उत्कीर्ण है[5] शेष स्याही से लिखित है, परन्तु विद्वानों ने उसे अभिलेख माना है। अतः

1- That which is inscribed anything words & c written or engered specif (1) Name, words, records cut on stone (2) those stamped upon a coin".

The universal dictionary of the english language - P - 608

2- गोपालपुर से प्राप्त बौद्ध सूत्रों वाली पांच ईटें (प्रोसीडिंग्ज - एशियाटिक सोसायटी बंगाल - भाग-65)

3- एपिग्राफिया इण्डिका - भाग 6 पृष्ठ 162 (पृष्ठ 99 - 103

4- एपिग्राफिया इण्डिका - भाग 6 पृष्ठ 166

5- एपिग्राफिया इण्डिका, भाग - 18, पृष्ठ - 19

अभिलेख के लिए उत्कीर्ण होना आवश्यक नहीं है।

अभिलेख लेखन की आधारभूत सामग्री का स्थायी होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि अस्थायी आधारभूत लेखन सामग्री जैसे ताड़-पत्र भूर्ज - पत्र तथ कागज पर उल्लिखित लेख अभिलेख नहीं माने जाते है। अतः किसी स्थायी आधारभूत लेखन सामग्री पर उद्‌देश्य विशेष से लिखा गया पुरातत्व महत्वयुक्त लेख ही अभिलेख है।

वाक्य एवं शब्द के अतिरिक्त किसी चिन्ह या संकेत को भी अभिलेख माना जा सकता है[1] यथा ॐ स्वास्तिक तथा सिद्धम् आदि के चिन्ह। स्पष्ट है कि ऐसे वाक्य अथवा वाक्यांश शब्द चिन्ह तथा संकेत जो स्थायी लेखन सामग्री पर प्रयोजन विशेष से लिखित हो 'अभिलेख' कहलाती है।

स्थायी होना नितान्त आवश्यक है। अस्थायी लेखन सामग्री पर लिखा गया कोई भी लेख अभिलेख की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है।

ध्यातव्य है कि केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने अपने कोश में 'आर्काइबल रिकार्ड' को अभिलेख माना है। इस कोश में नेशनल आर्काइब्ज के लिए राष्ट्रीय अभिलेखागार और आर्किविस्ट के लिए पुराभिलेखपाल शब्द प्रयुक्त है।[2]

परन्तु यह शब्द पुरातत्व विभाग सम्बद्ध नहीं है दोनों की अपनी पृथक् सत्ता है। 'आर्काइबल' में आने वाले लेखों को 'आर्काइब्ज' में संरक्षित किया जाता है। जबकि शिलालेखों तथा ताम्र-पत्र आदि अभिलेखों को अभिलेखागार में परिरक्षित किया जाता है जो पुरातत्व-विभाग की सीमा के अन्तर्गत है।

1- Inscribe - To mark or engrave (words, symbos etc) on some surface.

-बेबस्टर्स न्यू वर्ल्ड डिक्शनरी आफ द अमेरिकन लैंगुएज पृष्ठ - 755

2- पारिभाषिक शब्द संग्रह, पृष्ठ-100 (1962)

अभिलेखों का प्रस्तुत समय निरूपण

अभिलेखीय साहित्यागार में अनेकानेक ज्योतिर्मान रत्न है जो सभ्यता के प्रारम्भ से आज तक उसे अतीव आभा से परिपूर्ण किए हुए हैं। सिन्धु घाटी सभ्यता से अनेक अस्पष्ट व रहस्यात्मक अभिलेख प्राप्त हुए, जो तत्कालीन पारिवारिक, सामाजिक व राजनैतिक जीवन की सूचना देते हैं। भगवान बुद्ध के समय में भी अनेक लेख उत्कीर्ण हुए तथा पंचम शताब्दी ई.पू. का विप्रावा बौद्ध लेख है। परन्तु प्रायः सभी बौद्धकालीन लेख प्राकृत में लिखे गए हैं। ई.पू. चतुर्थ शताब्दी से द्वितीय शताब्दी में भी सभी अभिलेख प्राकृत में उत्कीर्ण हुए हैं, नानाघाट गुहालेख[2] व गरूड़ स्तम्भलेख[3] इसके दृष्टान्त स्वरूप हैं। अशोक के लेख भी प्राकृत भाषा में प्राप्त हुए हैं।

संस्कृत लेखों की प्राप्ति मूलतः प्रथम शताब्दी से होती है। अतः प्रस्तुत ग्रन्थ की सीमा प्रथम शताब्दी से सप्तम् शताब्दी पर्यन्त रखी गयी है। सप्तम् शताब्दी के पश्चात् राजपूत परम्परा छिन्न-भिन्न हो गई, मुस्लिम, आक्रमणकर्ताओं ने अभिलेखों की भाषा के रूप में 'संस्कृत' को स्थान नहीं दिया।

यहाँ यह ध्यातव्य है कि संस्कृत लेखों की प्राप्ति अधिकांशतः देश के पश्चिमी भाग से अधिक हुई है। भारतीय राजाओं की अपेक्षा विदेशी राजाओं ने अभिलेखीय भाषा के रूप में संस्कृत को अधिक मान्यता दी तथा गिरनार लेख विदेशी शासक 'रूद्रदामन' का है। अतः स्पष्ट है कि संस्कृत लेख प्रथम शताब्दी से सप्तम् शताब्दी पर्यन्त ही अपने शुद्ध रूप में प्राप्त हुए हैं।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य-प्रमुख राजवंश तथा तत्सम्बन्धित अभिलेखों का विवरण

1. क्षत्रप प्रणाली :-

कुषाण आदि विदेशी शासकों ने क्षत्रप प्रणाली को जन्म दिया। तक्षशिला, मथुरा, नासिक तथा उज्जयिनी ये प्राचीन क्षत्रप केन्द्र थे। 'भूमक' व नहपान प्रमुख 'क्षत्रप'

---

1. हिस्टोरिकल लिटरेटी इन्सक्रिप्शन्स - पृष्ठ-1

2. आर्कलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, एनुअल रिपोर्ट-1908-0 पृष्ठ-12

3. हिस्टोरिकल लिटरेरी इन्सक्रिप्शन्स, पृष्ठ-48-49

माने जाते हैं चुनार गुहालेख नहपान का ही है। इसके अतिरिक्त कामन्दक क्षत्रपों के वंश संस्थापक 'चष्टन' का सुपौत्र रूद्रदामन प्रथम गिरनार लेख का रचनाकार है।

2. गणराज्य :-

प्राचीन भारत में गणराज्य व्यवस्था का भी प्रचलन था। उत्तरी राजस्थान के 'यौधेय गणराज्य' में अभिलेखीय साहित्य का विकास अधिक हुआ। गणराज्यों का एक वैशिष्ट्य यह भी था कि इसमें जाति विशेष को ही महत्व दिया जाता था। इसलिए इस गणराज्य से सम्बन्धित अभिलेखों व सिक्कों आदि में बहुवचन में जाति का ही उल्लेख होता था, यथा-यौधेयानां[1] इसके अतिरिक्त 'मालव गणराज्य' भी गणराज्यों में अपना श्रेष्ठ स्थान रखता था, इसी गणराज्य द्वारा मालव सम्वत् का प्रारम्भ किया गया। 'नन्दसा बलि स्तम्भ लेख[2] मालव गणराज्य से ही सम्बन्ध रखता है।

राजतन्त्र :

राजतन्त्र प्रणाली प्राचीन समय सर्वाधिक प्रचलित थी। प्रमुख राजवंशों व सम्बन्धित अभिलेखों का परिचय निम्नवत् है।

1. नागवंश :-

नागवंश का समय तृतीय व चतुर्थ शताब्दी है। अपने कंधों पर शिवलिंग वहन करने के कारण इन्हें 'भारशिव' भी कहते हैं।

उदाहरणार्थ :- "अंस भार सन्निवेशित शिवलिंगोदवहन-शिवपरितुष्ट-समुत्पादित राजवंशानां पराक्रमाधिगत-भागीरथ्थमल-जल-मूर्ध्नीभिषिक्तानां भारशिवानां........।"[3]

नागवंशियों का स्थान पद्मावती (ग्वालियर) तथा मथुरा इतिहासविदों ने माना है। प्रयाग प्रशस्ति में भी नागवंशी राजा नागसेन का वर्णन प्राप्त होता है। नागवंश में संस्कृत अभिलेखों का उत्कीर्णन अपेक्षाकृत कम हुआ है।

---

1. भारतीय सिक्के-वायुदेव उपाध्याय- पृष्ठ-23-24

2. हिस्टोरिकल लिटरेरी इन्सक्रिप्शन्स- पृष्ठ- 56

3. वाकाटक प्रवरसेन का तिरोदी शासन-पत्र, एपिग्राफिया इण्डिका भाग-22, पृष्ठ-171

2. वाकाटक शाखा :

वाकाटक शाखा से सम्बद्ध को उपशाखाओं में विभाजित किया गया है- नान्दिवर्द्धन और वासिम (वत्सगुल्म) शाखा। इन शाखाओं का वंशक्रम निम्नवत है-विन्ध्यशक्ति (प्र.) प्रवरसेन (प्र.)- गौतमी पुत्र - रूद्रसेन (प्र.) - पृथ्वीसेन - रूद्रसेन (द्वि.) - प्रवरसेन (द्वि.) - नरेन्द्र सेन - पृथ्वीसेन थे।

उत्तरी नन्दिवर्द्धन शाखा से तथा विभाजन के पश्चात् दूसरी वासिम या वत्सगुल्म शाखा से सम्बद्ध शर्वसेन-विन्ध्यसेन (द्वि.) प्रवरसेन (द्वि.) अज्ञात - देवसेन - हरिषेण नृपतिगण हैं।

वाकाटक शाखा से सम्बद्ध अभिलेखों में अजन्ता गुहालेख, रिथपुर, सिवनी, तिरोदी, चम्मक, इन्दौर आदि शासन-पत्र है। अजन्ता गुहालेख अपने पुरातात्विक व ऐतिहासिक महत्व के लिए अद्यतन् विश्व विश्रुत है।

मौखरि वंश :

कोटा के समीपवर्ती बड़वा राज्य के शासक मौखरी थे। इनका समय लगभग तृतीय शताब्दी था। 'बल' नामक राजा मौखरी वंशीय राजाओं में सर्वप्रथम हैं। इनके पुत्र बलवर्द्धन का उल्लेख 'बलि-यूप स्तम्भलेख' में प्राप्त होता है- '(मौ) खरे बलपुत्रस्य बलवर्द्धनस्य यूप :।'[1]

मात्र 'बलि यूप स्तम्भ लेख' ही मौखरी वंश से सम्बद्ध माना जाता है अन्य किसी लेख या सिक्के पर मौखरि वंश का कोई प्रमाण प्राप्त नहीं हुआ।

गुप्त वंश :

गुप्त वंश भारतीय इतिहास का सर्वाधिक समृद्धशाली व ऐतिहासिक दृष्टि से सर्वप्रमुख वंशों की श्रेणी में अग्रगण्य रहा है। अभिलेखीय साहित्य के विकास में भी गुप्त वंशीय राजाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। अनेक मन्दिरों, स्मारकों, स्तम्भ-लेखों ताम्र-पत्रों, शासन-पत्रों, सिक्कों आदि का निर्माण इस वंश के नृपतियों द्वारा सम्पन्न हुआ।

गुप्त वंश के आदि राजा के सन्दर्भ में इतिहास विदों में मतैक्य नहीं है

---

1. बड़वा बलि यूप स्तम्भ लेख, हिस्टोरिकल लिटरेरी इन्सक्रिप्शन्स ऑफ इण्डिया-पृष्ठ 55-56

कुछ विद्वान श्रीगुप्त (240-280 ई.) को तो कुछ घटोत्कच को गुप्तवंश का प्रथम नृपति मानते हैं। सूक्ष्म गवेषणा से यह स्पष्ट हुआ है कि इस वंश के नृपतियों की सम्राट पद धारण करने की परम्परा चन्द्रगुप्त (प्र.) से प्रारम्भ हुई, जिन्होंने लिच्छवि राजकुमारी से विवाह किया। लिच्छवि राजकुमारी से उत्पन्न होने के कारण, पूना ताम्रपत्र में समुद्रगुप्त को 'लिच्छवि-दौहित्र' कहा गया है। समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम्भ लेख[2] एवं 'एरण लेख' अभिलेखीय साहित्यागार संसार के अतीव दीप्तिमान रत्न हैं।

चन्द्रगुप्त (द्वि.) 375 ई. में सम्राट बना। इनकी पुत्री प्रभावती का विवाह 'वाकाटक नरेश 'रूद्रसेन (द्वि.) से हुआ। इनके पुत्र कुमार गुप्त (प्र.) ने अपने शासनकाल में अभिलेखीय साहित्य में अनेक सिक्कों व अभिलेखों को जोड़ा जो साहित्यिक व ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अत्याधिक महत्त्वपूर्ण है। कुमारगुप्त (प्र.) से सम्बद्ध प्रमुख लेखों में दो गड़वा शिलालेख[4] बिलसद स्तम्भ लेख[5] मानकुँवर बुद्ध प्रतिमा लेख[6] एवं 'धानाइदह ताम्रलेख[7] हैं।

कुमार गुप्त के पुत्र 'स्कन्दगुप्त ने राज्यकाल के प्रमुख लेखों में जूनागढ़ शिलालेख,[8] भितरी लेख[9], बिहार स्तम्भ लेख[10]। कहौम स्तम्भाभिलेख[11] एवं इन्दौर ताम्रपत्र[12] हैं।

---

1. पूना ताम्रपत्र, हिस्टोरिकल लिटरेरी इन्सक्रिप्शन्स- पृ. 3

2. कार्पस इन्सक्रिप्शन्स इण्डिकैरम भाग-3 सं. 1

3. कार्पस इन्सक्रिप्शन्स इण्डिकैरम भाग-3 सं. 2

4. कार्पस इन्साक्रिप्शन्स इण्डिकैरम- भाग-3, सं. 8-9

5. कार्पस इन्साक्रिप्शन्स इण्डिकैरम - भाग-3 सं. 40

6. कार्पस इन्साक्रिप्शन्स इण्डिकैरम - भाग-3 सं. 11

7. सिलेक्ट इन्साक्रिप्शन्स, भाग-1 पृष्ठ-280-282

8. कार्पस इन्साक्रिप्शन्स इण्डिकैरम भाग-3 सं. 24

9. कार्पस इन्साक्रिप्शन्स इण्डिकैरम- सं. 13

10. कार्पस इन्साक्रिप्शन्स इण्डिकैरम- सं. 12

11. कार्पस इन्साक्रिप्शन्स इण्डिकैरम- सं. 15

12. कार्पस इन्साक्रिप्शन्स इण्डिकैरम- सं. 16

स्कन्दगुप्त के पुत्र कुमारगुप्त का नाम सारनाथ बुद्धि मूर्ति लेख[1] के लिए विख्यात है। इसके अतिरिक्त एक अन्य गुप्त नृपति कुमार गुप्त (तृ.) का नाम भितरी मुद्रा[2] के साथ लिया जाता है। बुधगुप्त के समय में जिन लेखों का उत्कीर्णन हुआ उनमें मुख्य हैं- दो दामोदरपुर ताम्रशासन-[3] सारनाथ बौद्ध लेख (बुद्ध प्रतिमा)[4] तथा एरण स्तम्भ लेख।[5]

उत्तर गुप्त वंश :-

इस वंश का शासन क्षेत्र मगध था। इससे वंश में ग्यारह राजाओं का उल्लेख प्राप्त होता है। आदित्यसेन इस वंश के प्रमुख राजा के रूप में जाने जाते हैं। इन वंश के प्रमुख लेखों में आदित्यसेन के अपसद[6], शाहपुर[7], मन्दार पर्वत लेख[8] तथा जीवितगुप्त के देववरणर्क[9] आदि हैं।

मौखरी वंश :

इस वंश के राजाओं में हरिवर्मन, आदित्य वर्मन, ईश्वर वर्मन, ईशानवर्मन, शर्ववर्मन, अनन्तवर्मन् तथा गृहवर्मा का नाम विशेष उल्लेखनीय है। 'ईशावर्मन' का हरह लेख[10] इस वंश का सर्वप्रमुख अभिलेख है।

---

1. आर्केलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया (एनुअल रिपोर्ट) पृष्ठ-124

2. हिस्टोरिकल लिटरेरी इन्सक्रिप्शन्स पृष्ठ- 102-103

3. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-15, पृष्ठ 134-139

4. हिस्टोरिकल लिटरेरी इन्सक्रिप्शन्स- 103-104

5. हिस्टोरिकल लिटरेरी इन्सक्रिप्शन्स पृष्ठ - 106

6. हिस्टोरिकल लिटरेरी इन्सक्रिप्शन्स पृष्ठ - 149-153

7. कार्पस इन्सक्रिप्शन्स इण्डिकैरम, भाग-3 सं.-43

8. कार्पस इन्सक्रिप्शन्स इण्डिकैरम भाग-3 सं. 43

9. कार्पस इन्सक्रिप्शन्स इण्डिकैरम सं. 46

10. हिस्टोरिकल लिटरेरी इन्सक्रिप्शन्स- पृष्ठ 141-144

इसके अतिरिक्त शर्ववर्मन का असीरगढ़ मुद्रा1 तथा अनन्तवर्मा का नागार्जुनी शैल गुहालेख[2] भी अभिलेखीय साहित्य की श्रीवृद्धि कर रहे हैं।

औलिकर वंश :-

जोधपुर और मन्दसौर के मध्य वाले भू-भाग पर औलिकर वंशीय राजा राज्य करते थे। इनका वंशक्रम इस प्रकार है :-

उपर्युक्त औलिकर वंशीय राजाओं से सम्बद्ध अभिलेखों में चन्द्रवर्मन का सुसुनिया लेख[3] नरवर्मन् का मन्दसौर लेख[4] विश्व वर्मन् का गंगधार शिलालेख[5] प्रमुख हैं।
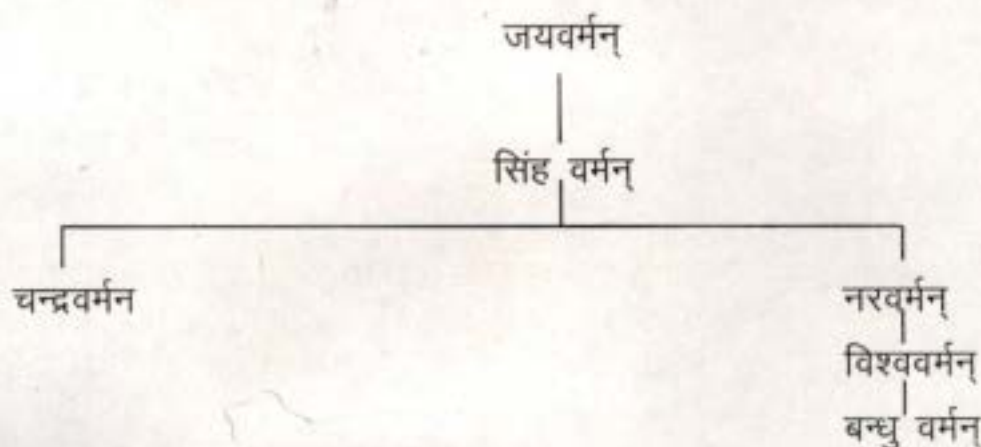
---

1. कार्पस इन्सक्रिप्शन्स इण्डिकैरम, भाग-3 सं. 43

2. वही, सं. 48

3. एपिग्राफिया इण्डिका, भाग-13, पृष्ठ-133

नोट :- श्री हरिप्रसाद शास्त्री ने मेहरौली स्तम्भ लेख को भी चन्द्रवर्मन् का माना है परन्तु अधिकांशतः विद्वानों ने इसका खण्डन किया है।

4. एपिग्राफिया इण्डिका-भाग-12, पृष्ठ-315-321

5. यशोधर्मन् का मन्दसौर स्तम्भ लेख, कार्पस इन्सक्रिप्शन्स इण्डिकैरम, भाग-3 सं. 35

हूण वंश :

इस वंश का समय लगभग 500 ई. माना गया है। 'तोरमाण' तथा 'मिहिरकुल' इस वंश के प्रमुख राजा हैं। मिहिरकुल 'तोरणमाण' का पुत्र था। 'एरण वराह लेख', तथा 'तोरमाण' के समय का ही है, तथा 'मिहिरकुल' ने गोपगिरि (ग्वालियर) में सूर्यमन्दिर बनवाया था।

गुहिल वंश :-

सातवीं शताब्दी में मेवाड़ के समीपवर्ती प्रदेश में गुहिलवंशीय राजा शीलादित्य व अपराजित्त राज्य करते थे। सामोली[2] तथा उदयपुर लेख[3] से इस विषय में जानकारी प्राप्त हुई है। ये दोनों लेख शीलादित्य व अपराजित से ही सम्बन्धित माने गए हैं।

मैत्रक वंश :-

इस वंश का संस्थापक गुप्त सम्राट स्कन्दगुप्त के प्रान्तीय सेनापति 'भटार्क' था। इस वंश में सोलह राजा हुए, जिन्होंने अभिलेखीय साहित्यागार में वृद्धि करने में अपना विशेष योगदान दिया। इस वंश के अधिकांशतः सभी लेख गद्य में हैं, जिनमें प्रमुख अभिलेख है- ध्रुवसेन के तीन पालिताना[3] एवं भावनगर शासन पत्र[4] धरसेन (द्वि.) के मलिय[5] पालिताना[6] और झर लेख[7], शीलादित्य (प्र.) के नवलाखी[8],

---

1. *हिस्टोरिकल लिटरेटी इन्सक्रिप्शन्स पृष्ठ 138-139*
2. *एपिग्राफिया इण्डिका भाग-20, पृष्ठ -97-99*
3. *एपिग्राफिया इण्डिका भाग-11, पृष्ठ -105-114*
4. *वही, भाग-15, पृष्ठ-255-258*
5. *कार्पस इन्सक्रिप्शन्स इण्डिकैरम, भाग-3, सं.-38*
6. *एपिग्राफिया इण्डिका भाग-11, पृष्ठ -80-85*
7. *भावनगर-कलेक्शन ऑफ प्राकृत एण्ड संस्कृत इन्सक्रिप्शन्स, पृष्ठ-31-32*
8. *एपिग्राफिया इण्डिका भाग-11, पृष्ठ -174-180*

पालिताना[1], धाँक शासन[2], शीलादित्य (द्वि.) का लुणसडि ताम्रपत्र[3] तथा शीलादित्य (तृ.) के देवली[4] जेसर[5] आदि शासनपत्र। मैत्रक वंश की वंशतालिका निम्नवत् है।
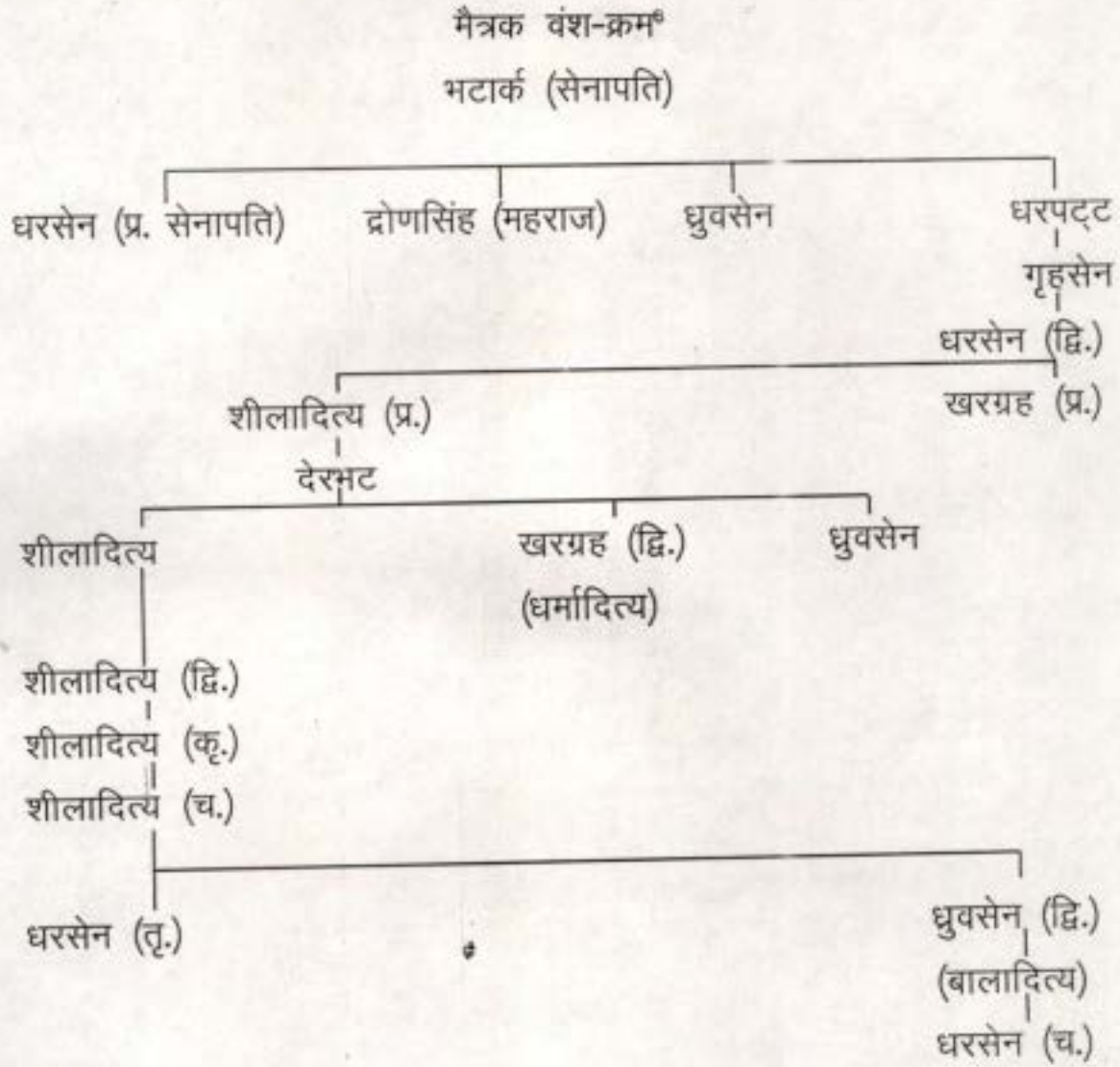
1. वही, पृष्ठ-115-118
2. इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, भाग-9 पृष्ठ 237-232
3. भावनगर-कलेक्शन ऑफ प्राकृत एण्ड संस्कृत इन्सक्रिप्शन्स, पृष्ठ-45-49
4. वही, पृष्ठ-55-58
5. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-22, पृष्ठ -114-120
6. दृष्टव्य - इण्डियन ऐण्टिक्वेरी भाग-5 पृष्ठ-208

'विष्णुषेण' नामक एक अन्य राजकर्मी को भी मैत्रक वंश से सम्बद्ध माना गया है[1] विष्णुषेण का स्थिति व्यवस्था पुत्र[2] अभिलेखीय साहित्य में अपना प्रमुख स्थान रखता है।

गारूलक वंश :-

सामन्त स्तरीय इस राजवंश में सेनापति वराहदास (प्र.) उसके दो पुत्र भट्टिशूर (सामन्त) तथा वराहदास (द्वि.) का पुत्र सिंहादित्य (सामन्त महाराज) आदि हुए। सिंहादित्य का पालिताना शासन पत्र[3] इस वंश से सम्बद्ध प्रमुख अभिलेख है।

वर्द्धन वंश :-

वर्द्धन वंश में नरवर्द्धन, राज्यवर्द्धन (प्र.), आदित्यवर्द्धन, प्रभाकरवर्द्धन तथा राज्यवर्द्धन (द्वि.) प्रमुख राजा हुए। राज्यवर्द्धन की मृत्यु के पश्चात् हर्षवर्द्धन नृपति बना। उसकी वीरता व पराक्रम विश्व विश्रुत है। बाँसखेड़ा शासन पत्र[4] इस वंश से सम्बन्धित मुख्य अभिलेख है।

भौमनारक वंश :-

भौमनारक वंश में 'भास्करवर्मा' तथा 'भूतिवर्मन' ये मुख्य नृपति हुए। निधानपुर[5] एवं दूबिशासन पत्र[6] ये भास्कर वर्मा कालीन अभिलेख हैं तथा भूतिवर्मन का वड़गंग लेख[7] प्राप्त हुआ है। भूतिवर्मन भौमनारक वंश के नवें राजा थे जबकि भास्कर वर्मा सोलहवें राजा के रूप में जाने जाते हैं।

---

1. एपिग्राफिया इण्डिका पृष्ठ-169

2. एपिग्राफिया इण्डिका पृष्ठ-163-181

3. एपिग्राफिया इण्डिका, भाग-11 पृष्ठ-16-20

4. हिस्टोरिकल लिटरेरी इन्सक्रिप्शन्स, पृष्ठ-145-147

5. हिस्टोरिकल लिटरेरी इन्सक्रिप्शन्स- पृष्ठ-235-240

6. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-30, पृष्ठ-287-304

7. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-30-पृष्ठ-287-304

चालुक्य वंश :-

चालुक्य वंशीय राजा दक्कन के विस्तृत भूभाग पर शासन करते थे। पश्चिमी दक्कन में राज्य करने वाले इस वंश के राजाओं की राजधानी 'वातापि' थी।

चालुक्यों का वंश क्रम इस प्रकार है-

इसके अतिरिक्त कतिपय अन्य राजाओं को भी चालुक्य वंशीय माना गया है। इनमें विक्रमादित्य, विनयादित्य तथा विजयादित्य आदि सम्राट उल्लेखनीय है। चालुक्य वंश से सम्बन्धित प्रमुख अभिलेख हैं- नेलकुन्द शासनपत्र[1] मंगलेश का महाकूट स्तम्भ लेख[2], मुधोल ताम्रशासन[3] पुलकेशिन (द्वि.) के कोप्परम[4] नेकर[5] माकरप्पि[6] और येकेरी शिलालेख[7] विक्रमादित्य (प्र.) के चिन्तकुष्ठ ग्रामदान लेख[8]
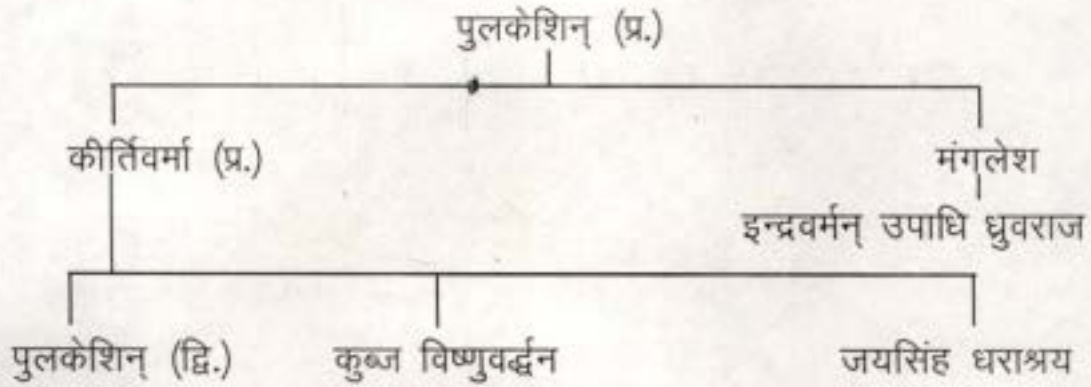
---

1. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-5 पृष्ठ-67-73

2. इण्डियन ऐण्टिक्वेरी भाग-19 पृष्ठ-720

3. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-32 पृष्ठ-293-298

4. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-18, पृष्ठ 257-260

5. इण्डियन ऐण्टिक्वेरी भाग-8 पृष्ठ-43-44

6. इण्डियन ऐण्टिक्वेरी भाग-8, पृष्ठ 43-44

7. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-5 पृष्ठ-6-9

8. इण्डियन ऐण्टिक्वेरी भाग-6 पृष्ठ-75-78

तल्लमंचि[1] इपकमकल[2] वेलनल्लि शासन पत्र[3], विनयादित्य के दय्य मदिन्ने[4], जेजुरी[5] कर्नूल[6] आदि शासन पत्र तथा विजयादित्य के नेरूर[7], मायलू[8] आदि शासन-पत्र है।

भोज वंश :-

पंचम शताब्दी से सप्तम् शताब्दी के मध्य दक्षिणी भारत के पश्चिमी भू-भाग पर भोज वंशीय राजाओं ने शासन किया। जिनमें देवराज, अशंकित, कापालिवर्मन और पृथ्वी मल्लिवर्मन, आदि का नाम उल्लेखनीय है। हरि गुत्ति लेख[9] तथा दो अन्य दान लेख इस वंश से सम्बन्धित प्रमुख अभिलेख माने गए हैं।

राष्ट्रकूट वंश :-

चतुर्थ शताब्दी में राष्ट्रकूट वंश की स्थापना 'मानक' द्वारा की गयी। राष्ट्रकूटवंशीय राजाओं का शासन-क्षेत्र मानपुर था। 'मानक' के पुत्र देवराज तथा उनके तीन पुत्र माणराज, अविधेय और भविष्य[1] ये राष्ट्रकूट वंश का वंशक्रम माना गया है। माणराज को ही विभुराज भी कहा गया है, जिनका हिग्णिवेर्डि[10] शासन पत्र उल्लेखनीय है।

---

1. विश्व के प्राचीन संस्कृत लेख पृष्ठ-41 पर उल्लिखित (ह.का.इ.का. प्ले स्टोर निलोर भाग-1 पृष्ठ-189-195)

2. कापर प्लेट ऑफ इन्सक्रिप्शन्स इन आन्ध्रप्रदेश म्यूजियम (भाग-1)

3. कापर प्लेट ऑफ इन्सक्रिप्शन्स इन आन्ध्रप्रदेश म्यूजियम

4. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-20 पृष्ठ-24-29

5. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-19 पृष्ठ-88-91

6. इण्डियन ऐष्टिक्वेरी भाग-6 पृष्ठ-88-91

7. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-9, पृष्ठ-125-130

8. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-33 पृष्ठ-311-344

9. एपिग्राफिया इण्डिका, भाग-28, पृष्ठ-70-75

10. एपिग्राफिया इण्डिका, भाग-29, पृष्ठ-174-177

कलचुरि वंश :-

षष्ठ एवं सप्तम् शताब्दी के लगभग माहिष्मती क्षेत्र में 'कलचुरि' राजवंश का शासन रहा। वेदनेर[1] तथा सरस्वनी[2] शासन पत्रों के अनुसार इस शाखा के राजाओं में 'कृष्णराज' उनके पुत्र 'शंकरगण' तथा पौत्र बुद्धराज। आभोण[3] तथा संखेड[4] शासन पत्र इस वंश से प्रमुख अभिलेख हैं।

नलवंश :-

नन्दुर के समीपवर्ती भाग में नलवंशीय राजाओं का साम्राज्य था। इस वंश में राजा भवदत्तवर्मन तथा अर्थापत्ति भट्टारक का नाम उल्लेखनीय है। रिथपुर दानलेख[5] तथा केसरिखेड़ा शासन पत्र[6] इस वंश से सम्बन्धित प्रमुख अभिलेख है।

शूरवंश :-

इस वंश के आदि पुरूष 'शूर' थे, अतः इस वंश को शूरवंश कहा जाता है। इस वंश के महत्वपूर्ण राजाओं में प्रसन्नमात्र का नाम अग्रगण्य है। प्रसन्नमात्र के दो पुत्र थे-महाजयराज एवं मानमात्र तथा मानमात्र के भी दो पुत्र थे- महासुदेवराज एवं महाप्रवर राज[7] महाजयराज का आरंगताम्र पत्र[8], महासुदेवराज का रायपुर ताम्रपत्र शासन[9] तथा महाप्रवरराज का ठाकुर दिया शासन पत्र[10] आदि इनके प्रमुख अभिलेख है।

---

1. एफिग्राफिया इण्डिका भाग-12 पृष्ठ 30-35

2. वही भाग-6 पृष्ठ 294-300

3. कार्पस इन्सक्रिप्शन्स इण्डिकैरम भाग-4 सं. 12

4. कार्पस इन्सक्रिप्शन्स इण्डिकैरम सं.-13

5. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-19 पृष्ठ-100-105

6. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-28 पृष्ठ 12-17

7. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-22 पृष्ठ-16

8. कार्पस इन्सक्रिप्शन्स इण्डिकैरम-भाग-3, सं. 40

9. कार्पस इन्सक्रिप्शन्स इण्डिकैरम सं. 41

10. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-7 पृष्ठ-102-107

पाण्डु वंश :-

पाण्डु के राजा दक्षिण कोसल के पश्चिमी भाग में शासन करते थे। इस वंश के प्रमुख राजाओं में तीवरराज, इन्द्रबल, नन्नदेव तथा महाशिवगुप्त बालार्जुन हुए। इनके प्रमुख अभिलेख।

इस प्रकार है- तीवर का राजिम शासन पत्र[1] तथा महाशिव गुप्त के सेनरवपाट[2] तथा सिरपुर[3] अभिलेख हैं।

द्वितीय पाण्डु वंश :-

पाँचवी शताब्दी के लगभग द्वितीय पाण्डुवंशीय राजाओं का आधिपत्य 'मेकला प्रदेश' (अमरकण्टक की पहाड़ियों के समीपवर्ती) में था। इस वंश के प्रमुख राजाओं में जयबल, वत्सराज, नागबल तथा भरतबल। भरतबल का बह्मनी शासन पत्र[4] अभिलेखीय साहित्यागार की श्रीवृद्धि कर रहा है।

शैलोद्भव वंश :-

षष्ठ शताब्दी में कोंगोद (गंजाम) में शैलोद्भव वंश का शासन था। माधवराज (प्र.) सैन्यभीत माधवराज (द्वि.) यशोभीत मध्यमराज तथा धर्मराज (मानभीत) आदि इस वंश के प्रमुख सम्राट हैं। प्रमुख अभिलेखों में सैन्यभीत का गंजाम शासनपत्र[5] यशोभीत का परिकुंड़ शासनपत्र[6] आदि है।

पितृभक्त वंश :-

कलिंग प्रदेश में पितृभक्त वंश के राजा हुए। इन्हें वप्प पाद भक्त[7] भी कहा गया है।

---

1. कार्पस इन्सक्रिप्शन्स इण्डिकैरम भाग-3 सं. 181

2. एपिग्राफिया इण्डिका भाग 31 पृष्ठ 31-36

3. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-31 पृष्ठ-197-198

4. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-21, पृष्ठ 132-143

5. एपिग्राफिया इण्डिका भाग 6 पृष्ठ-143-146

6. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-11 पृष्ठ 281-287

7. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-4, पृष्ठ-144

'उमावर्मन' तथा 'चण्डवर्मन' इस वंश के प्रमुख राजा हुए। इनके शासन पत्र क्रमशः बहत्प्रोष्ठा[1] तथा कोमर्ति शासन पत्र[2] है।

पल्लव वंश :-

गुप्त वंश के पश्चात् पल्लव वंश का भारत की सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विरासत की वृद्धि करने वाले राजवंशों की श्रेणी में सर्वोत्कृष्ट स्थान है। पल्लव वंशीय राजाओं के संरक्षण में अभिलेखीय साहित्यागार अनेक रत्नों से सुशोभित हुआ। इस वंश की आठ सौ वर्षों की कालावधि में अनेक राजा हुए जिनमें प्रमुख हैं- महेन्द्रवर्मन (प्र.) नरसिंहवर्मन महामल्ल, महेन्द्रवर्मन (द्वि.)[1] इस वंश से सम्बद्ध शासन पत्र, दानलेख, स्मारक लेख तथा अन्य अभिलेख बहुत अधिक संख्या में प्राप्त हुए हैं। जिनमें प्रमुख हैं- सात पगोडाओं के लेख[3] राजसिंहेश्वर के बाड़ेलेख[4], महेन्द्रवर्मेश्वर के मन्दिर के बाल लेख[5], पनमलइ गुहामन्दिर लेख[6], अमरावती लेख[7] तथा बिशिरापल्ली के समीपवर्ती शैल गुहा लेख[8]।

कदम्ब वंश :-

'मयूरशर्मन' द्वारा स्थापित वंश को कदम्ब वंश की संज्ञा दी गयी। यह वंश ब्राह्मण जाति का या परन्तु राज्य भार ग्रहण करने के पश्चात् सभी राजा क्षत्रिय हो गए। सभी शर्मन् के स्थान पर वर्मन शब्द का प्रयोग करने लगे। 'मयूरशर्मन' के पश्चात् पुत्रक्रम से कंगवर्मन और भगीरथ राजा हुए। भगीरथ के दो पुत्र थे रघु तथा काकुत्स्थवर्मा।

---

1. *एपिग्राफिया इण्डिका भाग-4, पृष्ठ-144*
2. *एपिग्राफिया इण्डिका भाग-11 पृष्ठ 1-3*
3. *साउथ इण्डियन इन्सक्रिप्शन्स भाग-1 सं. 1-23*
4. *साउथ इण्डियन इन्सक्रिप्शन्स भाग-1 सं. -25-26*
5. *साउथ इण्डियन इन्सक्रिप्शन्स भाग-1 सं. - 27*
6. *साउथ इण्डियन इन्सक्रिप्शन्स भाग-1 सं. - 31*
7. *साउथ इण्डियन इन्सक्रिप्शन्स भाग-1 सं. - 32*
8. *साउथ इण्डियन इन्सक्रिप्शन्स भाग-1 - 33-34*

काकुत्स्थ समेत शेष कदम्ब वंश-तालिका इस प्रकार है-

इस वंश से सम्बन्धित प्रमुख अभिलेखों में शान्तिवर्मन कालीन तालगुण्ड लेख[2] रविवर्मन का खेटग्राम लेख[3], जिनेन्द्र भू-दान सम्बन्धी लेख[4] देवणगेरे शासनपत्र[5] हरिवर्मा का वसन्तुवाटक ग्रामदान लेख[6] संगोली शासन पत्र[7] विष्णुवर्मन का लेख[8] कृष्णवर्मन् (द्वि.) का बनहल्लि शासन पत्र[9] आदि प्रमुख हैं।
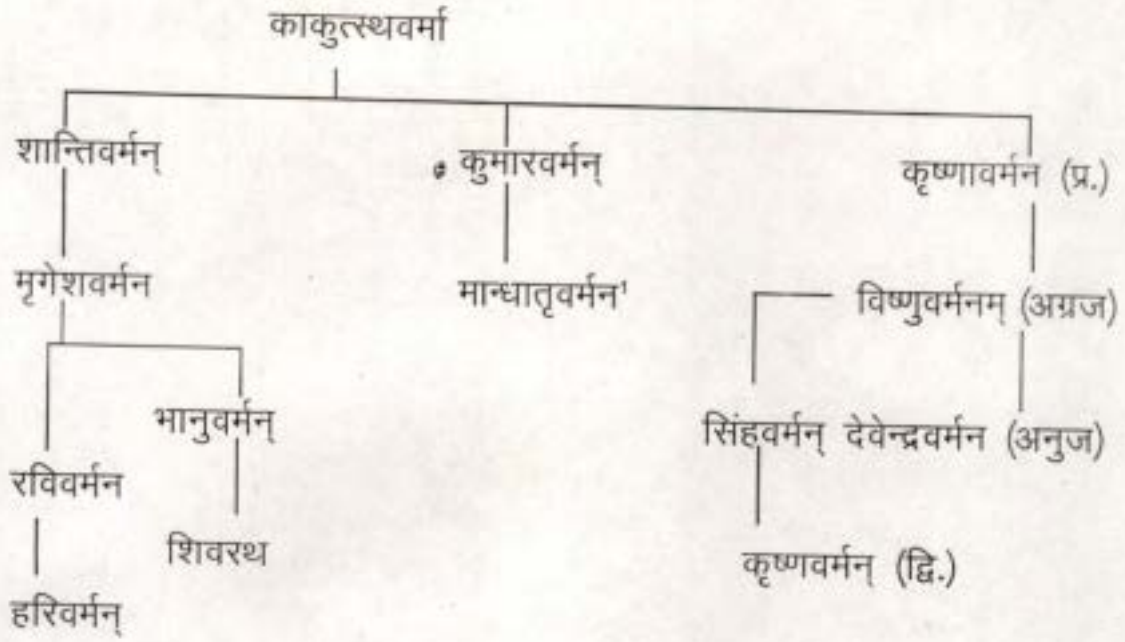
---

1. एपिग्राफिया कर्णाटिका, भाग-7, पाठ्य पृष्ठ-200-202

2. सेवेल महोदय ने मान्धातृवर्मन् को शान्तिवर्मन् का पुत्र माना है- हि.सा.इ.पृष्ठ 352

3. इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, भाग-6 पृष्ठ 25-27

4. एण्डियन ऐण्टिक्वेरी पृष्ठ-29-50

5. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-33 पृ. 87-92

6. एण्डियन ऐण्टिक्वेरी भाग-6, पृष्ठ-30-31

7. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-14, पृष्ठ 163-168

8. एपिग्राफिया कर्णाटिका भाग-6, पृष्ठ-91

9. एपिग्राफिया इण्डिका भाग-6, पृष्ठ 16-20

गांग वंश :-

चतुर्थ से पंचम शताब्दी में कर्णाटक (मैसूर) के दक्षिण वर्ती भू-भाग पर गांग वंशजों का शासन था। इस वंश के प्रमुख राजा कोंगणि (प्र.), माधव (पुत्र), आय्यवर्मन् (पौत्र) और माधव द्वितीय (प्रपौत्र) आदि हुए। इस वंश से सम्बद्ध प्रमुख अभिलेखों में पेनुकोण्ड ताम्रशासन[1] तथा मेर्कार शासन पत्र[2] आदि हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रथम से सप्तम शताब्दी के मध्य अनेक राजवंशों ने अभिलेखीय वाङ्मय के विकास में अपना अनुपम योगदान दिया। दान लेख, शासन पत्रों आदि के निर्माण के साथ स्मारकों के रूप में मन्दिरों का निर्माण भी कराया गया।

प्रमुख अभिलेखों का परिचयात्मक विवरण

1. नासिक गुहालेख :-

इसके स्थितिकाल के विषय में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। यह गुहालेख 'नहपान' के समय का है इन्हें क्षत्रप, और 'महाक्षत्रप' की उपाधि दी गयी। प्रथम शताब्दी के आसपास 'नहपान' का समय माना गया है। अतः यह गुहालेख भी प्रथम शताब्दी का ही माना जा सकता है। कपड़े पर लिखे अनुदान से गुफा की दीवारों पर खुदवाया गया है कि नहपान के जमाता दिनि का पुत्र दानवीर उषवदन्तु ने तीन हजार गाएँ भिक्षा में दी। वरनासा पर तीर्थ स्थापित किया। सोलह गाँव ब्राह्मणों को दिए अनेक तालाबों आदि का निर्माण कराया।

चिरस्थायी संदान समुदाय को प्रदान किया जिसकी वार्षिक ब्याज से बारह का सिक्का, कपड़े की कीमत बीस सन्यासियों में से प्रत्येक को दिया जाएगा, जो दान की गयी गुफा की देखभाल करते हैं। उषवदत्त के अभिलेखों में कई बाते मुख्य हैं जो उस समय की आर्थिक स्थिति पर विपुल प्रकाश डालती हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों को ब्याज की दरें उच्च थीं।

---

1. सिलेक्ट इन्सक्रिप्शन्स भाग-1, पृष्ठ-456-457

2. इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, भाग-1 पाठ्य पृष्ठ-363-365

2. रूद्रदामन का गिरनार शिलालेख

गिरनार शिलालेख का समय 150 ई. है। इसकी लिपि ब्राह्मी है। यह शिलालेख साहित्यिक काव्यात्मक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इस शिलालेख का अधिकांश भाग झील के जीर्णोद्धार का वर्णन करता है। यह उस प्रसिद्ध शिला के पश्चिमी पार्श्व में उत्कीर्ण है जिस पर अशोक के आदेश एवं स्कन्दगुप्त के अभिलेख हैं। इस शिलालेख का प्राप्ति स्थल जूनागढ़ है, जो वर्तमान समय में गिरनार नाम से जाना जाता है। संक्षिप्त रूप से विषयवस्तु इस प्रकार है-

गिरनार से थोड़ी दूर पर स्थित झील का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य के आदेश पर प्रारम्भ हुआ और अशोक के आदेश पर राज्यपाल यवनराज तुसष्प ने पूरा किया, परन्तु अनेक नदियों की बाढ़ ने इसे ध्वस्त कर दिया। झील का जीर्णोद्वार कार्य सुविसखा, अनर्त एवं सौराष्ट्र, सुपुत्र कुलैपा पहलव द्वारा उसके खजाने के धन से बिना कठोर करों अथवा बेगार श्रम के करवाया। नया बाँध ध्वस्त बाँध से तीन गुना चौड़ा, लम्बा व ऊँचा था। झील में बड़े नल और नदियाँ बनवाई थीं, जिससे कि बेकार पानी बिना हानि पहुँचाए बाहर निकलता रहे।

3. समुद्रगुप्त का प्रयाग-प्रशस्ति लेख

इलाहाबाद स्तम्भलेख के नाम से भी जाना जाता है। यह बलुआ पत्थर के 35 फुट लम्बे स्तम्भ पर उत्कीर्ण है। 'प्रयाग प्रशस्ति' के लेखक महादण्ड नायक 'हरिषेण' थे। इसकी भाषा संस्कृत है तथा ब्राह्मी लिपि में निबद्ध है। श्लोकों के अन्त में संख्यावाची शब्द मिलते हैं। इसमें कुल 33 पंक्तियाँ हैं। यह एक चम्पूकाव्य है, जिसमें 9 श्लोक हैं। स्रग्धरा शार्दूलविक्रीडित, मन्दाक्रान्ता एवं पृथिवी छन्द का प्रयोग किया गया है।

सम्पूर्ण लेख की विषय वस्तु पर यह दृष्टिपात किया जाए तो यह कहा जा सकता है कि आदि से अन्त तक 'समुद्रगुप्त' की प्रशंसा में विभिन्न उपमाओं तथा विशेषणों का प्रयोग किया गया है। उनके पिता चन्द्रगुप्त तथा लिच्छवी राजकुमारी कुमार देवी उनकी माता थी। इसके अतिरिक्त पौत्र घटोत्कच एवं प्रपौत्र गुप्त का वृत्तान्त भी अंकित है वह विधाओं एवं ललित कलाओं का प्रेमी तथा विद्वानों का संरक्षक था। वह अपने पिता द्वारा पाटलिपुत्र की राजगद्दी पर उत्तराधिकारी के रूप में बैठाया गया।

4. चन्द्रगुप्त (द्वि.) का मथुरा शिलालेख

इसका स्थितिकाल गुप्त संवत् 61-380 ई. है। यह शिलालेख उत्तर-प्रदेश के मथुरा नगर में रंगेश्वर महादेव के निकट स्थित चण्डूल-मण्डूल की वाटिका की दीवार पर उत्कीर्ण है। चार फुट चार इंच ऊँचे इस स्तम्भ का आधार पर ऊपरी भाग चौकोर है तथा बीच का भाग अष्टकोणीय है। निचले भाग में खड़े हुए पुरूष की एक मूर्ति बनी है, जिसके तीन नेत्र हैं तथा पैर टूट गए हैं। इस लेख की भाषा संस्कृत है तथा लिपि ब्राह्मी है। यह लेख गद्यमय है, जिसकी अन्तिम पंक्ति 'आर्या' छन्द का अर्द्धांश है। इसका उद्देश्य माहेश्वर सम्प्रदाय के अनुयायियों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना है कि इसकी देखभाल अपनी सम्पत्ति की भांति करें।

5. चन्द्र का मेहरौली लौह स्तम्भ लेख

इसका स्थितिकाल स्पष्ट नहीं हो सका है। इसका स्थान, दिल्ली से 9 मील दक्षिण की ओर स्थित 'मेहरौली' नामक स्थान है। यह कुतुबमीनार के पास स्थित एक लौह स्तम्भ पर उत्कीर्ण है। यह स्तम्भ लेख 23 फुट 8 इंच ऊँचा है। इसका व्यास आधार के पास 16 इंच व शीर्ष के पास 12 इंच है। विष्णु मन्दिर के सामने गरूड़ मूर्ति धारण करने के लिए उत्कीर्ण किया गया। इसकी भाषा संस्कृत है। सम्पूर्ण अभिलेख शार्दूलविक्रीडित छन्द के तीन पद्यों में है।

सम्पूर्ण लेख के सार रूप में कहा जा सकता है कि इसके निर्माण का प्रयोजन चन्द्र के द्वारा विष्णुपद गिरि पर विष्णुध्वज के रूप में इस स्तम्भ की स्थापना का उल्लेख करना है।

6. कुमार गुप्त (प्र.) का बिलसद स्तम्भ लेख

इसका समय शक् 96 के आसपास माना गया है। यह एटा जिले में अलीगंज तहसील के अन्तर्गत स्थित 'बिलसद' नामक ग्राम में स्थित है। यह 2 फुट 1 3/4 इंच लम्बा तथा 1 फुट 10 1/2 इंच चौड़ा है। यह स्वामी कार्तिकेय के मन्दिर का उल्लेख करता है। मन्दिर में सिंह द्वारा पथ, विश्रामगृह, भिक्षा भवन खेत एवं दर्शनीय ऊँचे स्तम्भ थे।

यह अभिलेख अत्यधिक खण्डित रूप में प्राप्त हुआ है, प्रथम चार पंक्तियाँ तो लगभग नष्ट हो चुकी हैं। भाषा संस्कृत व लिपि उत्तरी वर्ग की ब्राह्मी है। यह अभिलेख मूलतः चम्पूकाव्य हैं। इसमें दो छन्दों का प्रयोग किया गया है- स्रग्धरा व

शार्दूलविक्रीडित। इसका उद्देश्य स्वामी कीर्तिकेय के मन्दिर में ध्रुव शर्मा नामक व्यक्ति द्वारा एक प्रतोली के निर्माण एक सत्र की स्थापना एवं इन अभिलेखों वाले स्तम्भों की स्थापना करवाएं जाने का उल्लेख करना है।

7. स्कन्दगुप्त का गिरनार शिलालेख :-

इसका स्थितिकाल लेख में दो तिथियों में दिया गया है, प्रथम 136 गुप्त संवत् (=455 ई.) एवं द्वितीय 137 गुप्त संवत् (=456 ई.) सम्भवतः एक तिथि शिलालेख प्रारम्भ की होगी एवं द्वितीय समापन की। यह जूनागढ़ नगर से करीब एक मील पूर्व की ओर स्थित एक शिला पर 10 X 7 फुट, 3 इंच क्षेत्रफल पर उत्कीर्ण है। इस शिला पर रूद्रदामन का लेख व अशोक के शिलालेखों का एक 'सेट' भी उत्कीर्ण है। भाषा संस्कृत व लिपि दक्षिण भारतीय ब्राह्मी है। यह दो खण्डों में है प्रथम खण्ड में 23 पंक्तियाँ हैं तथा द्वितीय खण्ड में 6 पंक्तियाँ हैं। यह वैदर्भी शैली में उपनिबद्ध है तथा इसमें मालिनी आँर्या, उपजाति, इन्द्रवज्रा, वैतालिय, औपच्छन्दसिक और वंशस्थ छन्दों का प्रयोग किया गया है। इस शिलालेख का उद्देश्य स्कन्दगुपत के राज्यपाल पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित द्वारा सुदर्शन झील के बाँध के पुनर्निमाण कराए जाने का वर्णन करना है।

8. स्कन्दगुप्त का इन्दौर ताम्रपट्ट अभिलेख

इस अभिलेख का समय वर्ष 146 (465 ई.) है। इसका स्थान उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले की अनूप शहर तहसील के डिबाई परगने का इन्दौर नामक गाँव है जो अब एक छोटा सा खेड़ा है। यह अभिलेख 8 1/2 इंच लम्बे एवं 5 1/2 इंच चौड़े ताम्रपट्ट पर उत्कीर्ण है। 12 पंक्तियों वाले इस लेख को संस्कृत भाषा व ब्राह्मी लिपि में निबद्ध किया गया है। यह गद्य-पद्य मिश्रित है अर्थात् चम्पूकाव्य है। इसमें दो श्लोक है पहला शार्दूलविक्रीडित छन्द में तथा दूसरा इन्द्रवज्रा छन्द में है। इस अभिलेख का उद्देश्य देव विष्णु नामक ब्राह्मण द्वारा इन्द्रपुर (इन्दौर) के सूर्य मन्दिर को धर्मानुसार दान दिए जाने का उल्लेख करना है।

9. स्कन्दगुप्त का भितरी स्तम्भलेख :-

इस लेख में तिथि का उल्लेख नहीं किया गया है। स्कन्दगुप्त के अन्य अभिलेखों का समकालीन ही इसे भी माना जा सकता है। इसका प्राप्ति स्थल उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले की सैदपुर तहसील में, सैदपुर नामक कस्बे से

लगभग 5 मील उत्तर-पूर्व की ओर 'भितरी' ग्राम है। इसका क्षेत्रफल 2 फुट 4 1/4 इंच X 6 फुट 2 1/4 इंच है। इस लेख का स्वरूप भी खण्डित है। यह संस्कृत भाषा में ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण किया गया है। इसमें 19 पंक्तियाँ है। जिसमें 6 पंक्तियाँ गद्यात्मक हैं शेष पद्यमय हैं। लेख में पुष्पिताग्रा, मालिनी, शार्दूलविक्रीडित एवं अनुष्टुप छन्द का प्रयोग हुआ है। इस लेख का उददेश्य प्रथम कुमार गुप्त की स्मृति में स्कन्दगुप्त द्वारा भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापित करवाये जाने तथा उस गाँव को जहाँ स्तम्भ खड़ा है, प्रतिमा के नाम पर दान दिए जाने की घोषणा को निबद्ध करना है।

10. तन्तुवाय श्रेणी का मन्दसौर शिलालेख :-

इसका समय 436 ई. है। यह मन्दसौर नामक स्थान पर है। इसके लेखक वत्सभट्टि हैं। इसमें 44 श्लोक हैं। यह एक प्रस्तर-खण्ड पर उत्कीर्ण किया गया है, जिसका क्षेत्रफल 2 फुट 7 3/4 इंच X 1 फुट 4 1/2 इंच है। इसकी भाषा संस्कृत व लिपि दक्षिणवर्ती 'ब्राह्मी' है।

इसका काव्यगत सौन्दर्य नितान्त ही श्लाघ्यनीय तथा पूर्ण विकसित पुरालेखीय काव्य का उदाहरण है। इसमें शार्दूलविक्रीडित वसन्ततिलका आर्या, उपेन्द्रवज्रा उपजाति, वंशस्थ, द्रुतविलम्बित, हरिणी, इन्द्रवज्रा, मालिनी तथा मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग किया गया है। इस अभिलेख का उद्देश्य बन्धुवर्मा द्वारा सूर्यमन्दिर का निर्माण कराने तथा पश्चाद्वर्ती राजाओं द्वारा जीर्णोद्धार कराने का वर्णन करना है।

11. प्रभावती गुप्ता का पूना ताम्र पट्ट अभिलेख -

इस अभिलेख का समय लगभग 400 ई. है। यह अभिलेख पूना अर्थात् 'पुणे' (महाराष्ट्र) में स्थित है। इसमें 25 पंक्तियाँ हैं। यह संस्कृत भाषा में 'भारतीय काल' नामक लिपि में उत्कीर्ण किया गया। इस अभिलेख की लेखिका प्रभावती गुप्ता ने इस लेख में अपने पितृवंश के वंशक्रम का भी उल्लेख किया है। इस का उद्देश्य 'गुप्त' तथा 'वाकाटक' राजाओं के चरित्र पर प्रकाश डालना था।

12. तोरमाण का एरण अभिलेख :-

इसका समय षष्ठ शताब्दी के प्रथम चतुर्थांश के लगभग सिद्ध हुआ है। इसका प्राप्ति स्थल मध्यप्रदेश के 'सागर' जिले में 'एरण' नामक प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ पर कई अन्य नृपतियों ने भी अभिलेखों को उत्कीर्ण कराया है। इसमें संस्कृत भाषा में

उत्तरी वर्ग के परवर्ती ब्राह्मी लिपि का प्रयोग किया गया है। इसकी 8 पंक्तियाँ ही प्राप्त हैं। इस अभिलेख का उद्देश्य मातृगुप्त के भाई धन्य विष्णु द्वारा उस मन्दिर के निर्माण का उल्लेख करना है, जहाँ ये प्रतिमा मिली है।

13. यशोधर्मन् विष्णुवर्द्धन का मन्दसौर शिलालेख :-

इस शिलालेख को मालव संवत् 589 (532 ई.) में उत्कीर्ण किया गया। इसका प्राप्ति स्थल मध्यप्रदेश राज्य में प्राचीन दशपुर (मन्दसौर) नामक स्थान है। यशोध र्मन् का यह प्रथम लेख एक पत्थर पर उत्कीर्ण किया गया जिसे एक कुँए की सतह पर चिपकाया गया। यह मूलतः शैव लेख है, इसमें शिव की उपासना विशेष रूप से की गयी है। यह संस्कृत में ब्राह्मी लिपि में निबद्ध किया गया इसमें 25 पंक्तियाँ हैं।

14. ईशावर्मन् का हरह अभिलेख :-

ईशावर्मन् का हरह (हड़हा) नामक स्थान पर है। इसमें 22 पंक्तियाँ हैं। इसे संस्कृत भाषा की गुप्तलिपि में उत्कीर्ण किया गया है। इस अभिलेख में ईशावर्मन की वीरता पराक्रम तथा वैभव का वर्णन किया गया है। इसमें ईशावर्मन् द्वारा मालव सम्वत् 611 (555 ई.) में मन्दिर-निर्माण कराये जाने का भी उल्लेख है।

15. हर्ष का बाँसखेड़ा ताम्रपट्ट अभिलेख :-

इसका समय 628 ई. है। यह बाँसखेड़ा (शाहजहाँपुर) नामक स्थान पर हर्ष द्वारा उत्कीर्ण कराया गया। यह संस्कृत भाषा में ब्राह्मी लिपि में निबद्ध है। इसका उद्देश्य हर्ष द्वारा अपने अधीन राजाओं, अधिकारियों, प्रतिनिधियों, पार्षदों, निरीक्षकों, न्यायधीशों व सेवकों को आदेश देना था।

16. पुलकेशिन (द्वि.) का ऐहोल शिलालेख :-

यह अभिलेख शक् संवत् 556 में उत्कीर्ण किया गया। यह अभिलेख उत्तर प्रदेश के बीजापुर जिले से प्राप्त हुआ है। यह भारतीय इतिहास की सूचना देने वाले अभिलेखों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह संस्कृत भाषा में दक्षिण भारतीय ब्राह्मी लिपि में उपनिबद्ध किया गया। साहित्यिक दृष्टिकोण से भी यह शिला लेख अत्यन्त ही उच्चकोटि का है, जिसकी तुलना लौकिक संस्कृत साहित्य के महाकाव्यों जैसे किरातार्जुनीयम तथा 'रघुवंशमहाकाव्यम्' आदि से की जा सकती है। इसका उद्देश्य पुलकेशिन् (द्वि.) के पराक्रम वंशक्रम व पराक्रम पर प्रकाश

डालना था।

इस प्रकार स्पष्ट है कि ये सोलह अभिलेख अभिलेखीयसाहित्यागार के वे जगमगाते रत्न हैं जिनके प्रकाश में अन्य सभी का प्रकाश धूमिल हो जाता है। सम्पूर्ण अभिलेखों की समस्त विशेषताएँ मात्र इन अभिलेखों में देखी जा सकती हैं। यदि इन अभिलेखों को अभिलेखीय साहित्य से पृथक कर दिया जाए तो उसका समस्त सौष्ठव व सुषमा समाप्त हो जाएगी।